Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-2, September-2018

शेरघाटी अनुमण्डल : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर

डॉ.राजेश कुमार
सहायक प्राध्यापक शिक्षा विभाग नालंदा कॉलेज, बिहार (नालंदा)
ई मेल : rajesh.kashi2009@gmail.com सम्पर्क सं.: 8340510863,8757237867

सारांशिका

शेरघाटी अनुमण्डल गया (बिहार) जिले का एक महत्वपूर्ण भूभाग है। यहाँ की धरती गया एवं बोधगया की भाँति ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक दृष्टिकोण से उर्वर है। यद्यपि अंग्रेज विद्वान जॉर्ज ए. ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक नोट्स 'ऑन द डिस्ट्रिक्ट ऑव गया' में शेरघाटी अनुमण्डल को एक असभ्य, अनार्य, असंस्कृत, जंगली झाड़ियों से भरपुर एवं अपराधिक वारदातों से आच्छादित बताया है जिसका अनुसरण कर बुकानन, कनिंघम जैसे विद्वानों ने अपने यात्रा–भ्रमण में इस क्षेत्र को नजंरदाज किया। जबकि वास्तविकता है कि ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक परिप्रेक्ष्य में गया एवं बोधगया से शेरघाटी अनुमण्डल की महता कम नहीं रही, बल्कि प्रशासनिक दृष्टिकोण से तो यह गया को भी पीछे छोड़ जाता है। इसकी स्पष्टता इस तथ्य से होती है कि शेरघाटी, थाड़ी पहाड़ी, गुनेरी, भुरहा, दुब्बा, दिलोर, मण्डा, नगवांगढ़ जैसे पुरास्थलों पर न केवल बुद्धकालीन अवशेषों का बिखराव है, अपितु कई स्थल तो स्तूपों, मूर्तियों एवं महाविहारों से आच्छादित प्रतीत होते हैं। अतएव शेरघाटी अनुमण्डल ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक दृष्टिकोण से एक महत्त्वपूर्ण शोध का विषय है।

इतिहास में क्षेत्रीय अध्ययन का विशेष महत्त्व है। बिहार में क्षेत्रीय दृष्टिकोण से ऐतिहासिक अध्ययन अल्प यात्रा में किया गया है। एस. एन. सिंह, योगेन्द्र मिश्र, ए. के. सिंह, ए. क्यू. अंसारी जैसे विद्वानों द्वारा किया गया क्षेत्रीय अध्ययन का विशेष महत्त्व है। यद्यपि गया एवं बोधगया पर अनेक शोध किये गये हैं लेकिन गया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा शेरघाटी अनुमण्डल की ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक दृष्टिकोण से अभी तक कोई अध्ययन नहीं किया गया है जबकि शेरघाटी अनुमण्डल की प्राचीनता बुद्ध काल से कमतर नहीं ठहरती। परिणामतः प्रस्तुत शोध–प्रपत्र शेरघाटी अनुमण्डल के विभिन्न पुरास्थलों के सर्वेक्षणोपरांन्त प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : क्षेत्रीय अध्ययन, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक, शेरघाटी अनुमण्डल

शेरघाटी अनुमण्डल सांस्कृतिक विरासतों का अद्‌भूत संगम है। शेरघाटी अनुमंडल पुरातात्त्विक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बिहार प्रांत अन्तर्गत मगध प्रमण्डल में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यद्यपि गया जिले के उत्तरी एवं पूर्वी क्षेत्रों में कनिंघम, बुकानन, मेजर किट्टो जैसे अंग्रेज विद्वानों की भ्रमण–यात्रा से अनेक पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक महत्त्व का पुरास्थल प्रकाश में आया और उसका अन्वेषण एवं उत्खनन भी किया गया। लेकिन तत्कालीन समय में गया के दक्षिणी एवं दक्षिणी–पश्चिमी क्षेत्र अर्थात् शेरघाटी अनुमंडल को एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण से पिछड़ा एवं अविकसित समझकर इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। किन्तु वास्तविक तथ्य यह है कि मगध प्रमण्डल का कोना–कोना पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक धरोधरों से भरा–पुरा है और शेरघाटी अनुमंडल इसकी प्रमाणिकता सिद्ध करता है। शेरघाटी अनुमंडल मानव के प्रारम्भिक काल से आद्य तक की अपने इतिहास को प्रतिबिम्बित करता है।

शेरघाटी हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन, सिख और ईसाई धर्म सहित सभी धर्मों का सम्मिलत स्थल है। प्रस्तुत शोध पत्र में शेरघाटी अनुमण्डल के विभिन्न क्षेत्रों में फैले पुरास्थलों का ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृश्टिकोण से विवेचित किया गया है।

शेरघाटी

शेरघाटी अनुमंडल का मुख्यालय अनेक विरासतों को संजोये है। इस शहर के पूर्वी छोर पर बूढ़ी नदी के किनारे एक विशाल गढ़ है जो 20 एकड़ में फैला है। इसके चारों ओर सुरक्षार्थ गहरी खाई खोदी गयी थी जिसके साक्ष्य आज भी देखे जा सकते हैं। गढ़ी का बनावट यद्यपि भरतपुर शैली में है किन्तु इसमें चिकनेदार ग्रेनाइट पत्थर का इस्तेमाल किया गया है। इस गढ़ के आस–पास जलापूर्ति हेतु अनेक कुएँ एवं तालाब बनाये गये थे। कुएँ के निशान तो अब नहीं मिलते हैं लेकिन दो तालाब के चित्र अब भी देखे जा सकते हैं। गया गजेटियर के अनुसार यह गढी छोटानागपुर के कोल राजाओं द्वारा निर्मित थी।[1] जनक नन्दन प्रसाद के अनुसार इस गढ़ को राजपूत राजाओं ने बनवाया था लेकिन बाद में उन्होंने अपने कथन का खण्डन करते हुए शेरशाह द्वारा बनवाया गया माना है।[2] शेरशाह के जमाने की अनेक इमारतें इस क्षेत्रों में विद्यमान हैं, जैसे– शाही मस्जिद, हजरत कमर अली सुल्तान की दरगाह तथा ईदगाह एवं चट्टी जहाँ वर्त्तमान में मदरसा महमूदिया चलता है। फलतः ओमेली के कथनुसार इस गढ़ी को कोल राजाओं समकालीन मानना उचित है।[3] लेकिन कदाचित खुदाई के क्रम में कुछ मृद्भाण्डों पर फारसी भाषा में अभिलेख मिले हैं जिससे स्पष्ट होता है कि यहाँ मुसलमान शासकों का आधिपत्य था।

जनक नन्दन प्रसाद के कथनानुसार शेरघाटी तालाबों एवं मस्जिदों का शहर था।[4] शहर के विभिन्न स्थलों पर आज भी तालाब मौजूद है जिससे पेय एवं कृशि कार्य में बेहतर तरीके से प्रयुक्त है। शाही मस्जिद एक ऐतिहासिक मस्जिद है जो शेरशाह के शासनकाल में बनी। इसके अलावा हेमजापुर का हजरत कमर अली सुल्तान एवं लोदी शहीद में हजरत मौलाना अब्दुर्रहमान का मजार विशेष ख्याति रखता है। इस प्रकार शेरघाटी में हिन्दू–मूसलमानों की मिल–जुली आबादी है जो सहिष्णुता एवं सर्वधर्म के मूल–मत्रों पर अमल करते हुए सांस्कृतिक समरसता को बरकरार रखें है। शहर के मध्य में गिरिजाघर का उपस्थित होना शेरघाटी पर अंग्रेजों के वर्चस्व को भी घोतित करता है।

शहर के केन्द्र में स्थित पद्मावत मन्दिर एवं दुल्हिन शिवालय हिन्दू संस्कृति की उपस्थिति दर्ज कराती है।[5] यहाँ से प्राप्त मन्दिर एवं प्रतिमाये धर्मिक सहिष्णुता का अनुभव कराता है। शेरघाटी में परमौती स्थान, पदमौती स्थान, देवी स्थान एवं भगवती स्थान आदि नामों से चर्चित पद्मावत् मन्दिर का अपना विशिष्ट महत्व है। मन्दिर के गर्भगृह में काले बैसाल्ट पत्थर की लगभग ढ़ाई फीट ऊँची मूर्ति विराजमान है। इस प्रतिमा के एक तरफ काली, दूसरी ओर सरस्वती और कंधे पर भैरव जी का स्थान है। साथ ही इसमें बाघ एवं हाथी का अंकन है। यह मूर्ति पालकालीन है। साथ ही पालकालीन अनेक अवशेष यथा–बौद्ध प्रतिमा, स्तूप आदि भी इस मन्दिर में मिलते है। इस मन्दिर के बाहर एक पेड़ के नीचे खण्डित रूप में बौद्ध प्रतिमा एवं स्तूप बड़ी मात्रा में मिले है। इसके अतिरिक्त शेरघाटी शहर के विभिन्न मन्दिरों में गौतम बुद्ध की प्रतिमाये एवं स्तूप स्थापित है। इन मूर्तियों से बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण से लेकर परिनिर्वाण तक की घटनाएँ प्रतिबिम्बित होती है।

गुरूआ

गया जिला मुख्यालय से 50 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम एवं शेरघाटी अनुमंडल मुख्यालय से 15 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में गुरूआ प्राचीन ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व का स्थल है। पाँच एकड़ में फैले एक गढ़ से लाल मृदभाण्ड एवं एन.बी.पी. पात्र बड़ी मात्रा में मिले है।[6] साथ ही यहाँ कदाचित खुदाई में बुद्ध, शिव, कार्तिक एवं गणेश की प्रतिमा मिली है। लोगों के विचार में यह गढ़ कोल राजओं द्वारा निर्मित थी।

यहाँ से ब्लैक बैसाल्ट पत्थरों से निर्मित मूर्तियाँ भी बड़ी मात्रा में मिली है। यद्यपि ये निर्मित मूर्तियाँ खण्डित अवस्था में हैं लेकिन ये गौतम बुद्ध के जन्म से लेकर उनके निर्वाण प्राप्त करने तक की विभिन्न घटनाओं को चित्रित करते हैं। इन मूर्तियों के बनावट से आभास

होता है कि ये मूर्तियॉ प्रारम्भिक पालकालीन थी। इन मूर्तियों को वर्तमान में डिहवार बाबा के नाम से पूजा जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समय में यह महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल रहा होगा। इसकी पुष्टि यहाँ से प्राप्त पुरावशेष एवं इसके पड़ोस में अवस्थित प्रमुख बौद्ध स्थलों यथा– मण्डा, मरहट–मुरली, भुरहा, गुनेरी, देवकली, चिलोर, तरोवा, नसेर आदि स्थलों से होता है।

यहाँ के शिवाला मन्दिर एवं सूर्य मन्दिर हिन्दु संस्कृति के वाहक है। इन मन्दिरों का की स्थापत्य एवं संरचना शैली गुप्तकालीन प्रतीत होती है। गढ़ के उतर में एक गुरूद्वारा की स्थापना गुरूनानकजी के द्वारा अपने पद यात्रा के दौरान की गयी थी। इससे स्पष्ट होता है कि गुरूआ सभी धर्मो का सम्मिलन स्थल है जहाँ समय–समय पर अपनी वर्चस्वता को कायम किया ।

<u>दुब्बा–भुरहा</u>

मगध के गौरव–गरिमा से भरा–पुरा दुब्बा एवं भुरहा एक ऐतिहासिक, रमणीय एवं प्राकृतिक पुरास्थल है। भुरहा एवं दुब्बा 24 38′ उत्तर 84 46′ पुरब गुरूआ प्रखण्ड मुख्यालय से तीन किलोमीटर पश्चिम में गुरूआ–भरौन्धा–महापुर मार्ग पर अवस्थित है। 1847 ई. में मेजर किट्टों ने इस स्थल का सर्वेक्षण किया था। उन्होंने बताया कि यहाँ अनेक चैत्य एवं विहार अवस्थित है। साथ ही गर्म पानी का झरना भी है जो स्वतः निःसरित है।[7] यहाँ काफी मात्रा में बैसाल्ट पत्थर से निर्मित बुद्ध के प्रतिमायें मिली है। यहाँ विभिन्न आसनयुक्त पीठिका का उद्योग था जिसपर बुद्ध की मूर्तियों को निर्मित किया जाता था।[8] इन मूर्तियों एवं पीठिका का निर्माण बगल में अवस्थित बैसाल्ट एवं ग्रेनाइट चट्टानों से युक्त पहाड़ को काटकर किया जाता था। इसकी पुष्टि यहाँ से प्राप्त विभिन्न आकारों मे निर्मित मूर्तियाँ से होती है। साथ ही खण्डित मूर्ति काफी मात्रा में मिली है।

बोधगया से सारनाथ जाने के क्रम में गौतम बुद्ध ने यहाँ विश्राम किया और लोगों को बौद्ध धर्म के बारे में बताया।[9] इसका आभास इस बात से भी होता है कि यहाँ जल का स्वतः निःसरण के साथ ही काफी मात्रा में योगासन करने हेतु पीठिका भी प्राप्त हुए है। यहाँ तीन जल–कुंड भी है जहाँ पवित्र धर्मिक अनुष्ठान भी किया जाता है। वर्तमान में यह एक प्राकृतिक मनोरम स्थल होने के साथ ही सांस्कृतिक परम्परा का संगम भी है। यहॉ प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा एवं विसुआ में विशाल मेला लगता है।

दुब्बा में लगभग 8 एकड़ में फैला 50 फीट ऊँचा एक प्राचीन गढ़ है जहाँ से कदाचित खुदाई के क्रम में बौद्ध एवं हिन्दू धर्म की मूर्तियों और विभिन्न कालों के मृद्भाण्ड मिले है। सर्वेक्षण में गढ़ के चारों कोने पर तालाब मिली है जिससे आज भी कृषि कार्य किये जाते है। यह तालाब सुरंग द्वारा गढ़ से सम्बद्ध था। बुद्ध की मूर्तियों ब्लैक बैसाल्ट से निर्मित है जो मथुरा शैली में निर्मित है और इस प्रकार इसका काल–क्रम पाल कालीन ठहरता है। साथ ही हिन्दू प्रतिमाओं में शिव, विश्णु एवं कार्तिक प्रमुख रूप से मिले है। इस गढ़ से बौद्ध मन्दिर सदृश अनेक पैनल बने मिले है जो एकाश्म बैसाल्ट पत्थर से निर्मित है। इन पैनलों में बुद्ध के आसनयुक्त प्रतिमा के साथ ही छोटे–छोटे बोधि मन्दिर के चित्रांकन मिलते है। इस पैनल की सुगढ़ता एवं चिकनापन को देखकर पाल काल की सर्वोच्च स्थापत्य संरचना को परिलक्षित करता है। साथ ही यहाँ से काफी मात्रा में स्तंभ, छिद्रयुक्त मनके, मिट्टी की मुहर, आसनयुक्त पीठिका एवं सिक्के भी मिले है। यहाँ से मिट्टी के खपड़े से निर्मित वलय कूप रिंग वेल भी मिले है। विभिन्न पाषाण स्तम्भों पर बुद्ध की बनी आकृति मिली है। एक स्तम्भ पर अभिलेख भी अंकित मिला है। इसके अतिरिक्त छोटे–छोटे स्तूप भी मिले है जो इसके बौद्ध स्थल के रूप में होने को परिलक्षित करते है।

मण्डा

मण्डा एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। मण्डा 24 46′ उत्तर – 84 43′ पूरब गुरूआ प्रखण्ड मुख्यालय से 6 किलोमीटर पश्चिम में गुरूआ–भरौन्धा–महापुर मार्ग पर और ग्रैंडट्रक रोड एन. एच.–2 से 7 किलोमीटर उत्तर से अवस्थित है। लेकिन गया गजेटियर[10] के अनुसार ग्रैण्ड ट्रक रोड पर स्थिल मदनपुर नामक गाँव से उत्तर 25 किलोमीटर की दूरी पर मण्डा अवस्थित है। मेजर किट्टो[11] के अनुसार, मण्डा एक प्राचीन स्थल है जिसके चारो ओर विस्तृत क्षेत्र में मृद्भाण्ड एवं ईटों का व्यापक फैलाव है। उनके अनुसार बुद्ध एवं शिव मन्दिर चट्टानों पर अवस्थित है जिसके केवल चित्र ही पहाड़ के बायें तरफ मिलते है। साथ ही एक पेड़ के नीचे भारी मात्रा में विभिन्न कालों के प्रतिमाओं के टूकड़ो का ढ़ेर है। इनमें से दो प्रतिमाओं में देवी द्वारा स्तनपान कराते बच्चों को दिखाया गया है। मेजर किट्टो के रिर्पाट के आधार पर बंगाल लिस्ट[12] एवं गया गजेटियर भी इस पुरातात्विक स्थल का विवरण प्रस्तुत करता है।

मण्डा पहाड़ के पूरब से लेकर उत्तर तक लगभग 50 एकड़ में फैला गढ़ के अवशेश है जो महाविहार के यूप में प्रतिबिम्बित करता है। यहाँ उतरी काली चमकीली मृद्भाण्ड, लाल एवं काला मृद्भाण्ड और काला मृद्भाण्ड बहुतायात में मिलते है। ये पात्र–प्रकार हस्त निर्मित एवं चाक निर्मित दोनों मिलते है। इसके अतिरिक्त अन्य अवशेषों में फलक, छिद्रयुक्त मनके एवं विभिन्न प्रतिमाये भी मिली है। साथ ही खण्डित प्रतिमाओं के ढ़ेर मिले है जो बुद्ध के महाभिनिष्क्रिमण से लेकर परिनिर्वाण तक की घटनाओं को उद्घटित करता है। यद्यपि यहाँ 6–7 फीट की तीन प्रतिमाये थी जो कालान्तर में चोरी हो गई लेकिन मण्डा को एक मूर्ति निर्माण क्षेत्र सम्बद्ध करने पर मण्डा एक व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र के रूप में भी परिलक्षित होता है।

मण्डा एक ऐतिहासिक शहर है।[13] इसकी स्पश्टता इस तथ्य से होती है कि यहाँ विहार एवं चैत्य स्थापित थे जो कालान्तर में काल–कवलित हो गये लेकिन इन विहारों में प्रयुक्त पात्र–प्रकार आज भी पुरास्थल के ऊपरी सतह पर मिल जाते है। साथ ही यह स्थल पचार देवकली, चिलोर एवं गुनेरी का समकालिन है जो वाणिज्य–व्यापार के साथ ही धर्मिक स्थल का भी प्रमुख केन्द्र था। यहाँ रोज–मर्रे की सामाग्रियों के साथ ही लाह की मूर्ति एवं अनाजों का मुख्य रूप से व्यापार होता था।

गुनेरी

शेरघाटी अनुमण्डल मुख्यालय से 6 मील पश्चिम में ग्रैडट्रक रोड पर अवस्थित चण्डीस्थान से दो मील उत्तर में गुनेरी बौद्ध धर्म से सम्बद्ध एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। गुनेरी पृथ्वी के उतरी–पूर्वी गोलाद्ध में 24 37′ अक्षांश एवं 84 44′ देशांतर पर अवस्थित है। मेजर किट्टो[14] पहला सर्वेक्षणकर्ता था जो इस गाँव को देखने आया था। उस समय यह ‘गुनेरिया’ के नाम से जाना जाता था। उन्होंने सर्वेक्षण के क्रम में एक विशाल नगर एवं विहार के अवशेष के साथ ही नगर से उत्तर में एक बड़े तालाब का साक्ष्य पाया । यहाँ भगवान बुद्ध की मूर्ति एवं शिव लिंग के साथ ही प्राचीन नगर के अवशेष मिले है। 1872–73 में बंगाल लिस्ट में पुरातत्वविद बेंगलर[15] द्वारा एवं गया गजेटियर[16] में भी इसका जिक्र किया गया है। बुद्धनामा में यह गांव ‘गुणतेरी’ के रूप में व्याख्यायित है।

आज भी यहाँ अनेक बौद्ध एवं हिन्दू धर्म से सम्बद्ध स्थापत्य संरचनायें मिलते है। दो अभिलेखों में इस ग्राम का प्राचीन नाम ‘श्री गुणचरित्र’ बताया गया है। अन्य पाँच अभिलेख जिसमें बौद्धो के विषय में जानकारी मिलती है, उसे कुरैशी लिस्ट में व्यक्त किया गया है।[17] यद्यपि यहाँ से प्राप्त कुछ प्रतिमायें, जिस पर लेख अंकित है, की संरचना–अवधि मध्यकाल ठहरता है।

यहाँ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा बनवाये गये एक 12 फीट लम्बे और 10 फीट चौड़े कमरे में कुछ बुद्ध मूर्तियाँ रखी हुई है। पास–पड़ोस के ग्रामीणों के बीच यह स्थान ‘भैरो जी का

स्थान' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ रखी गई मूर्तियों में पश्चिम तरफ की दीवार से लगा हुआ भगवान बुद्ध की पद्मासन पर स्थित भूमि स्पर्श मुद्रा में छः फीट की प्रशस्त मूर्ति है। सिर पर पीपल की एक टहनी है और मस्तक के चारों ओर 'मंडल' पीठिका पर प्राचीन नागरी लिपी में दो पंक्ति के अभिलेख अंकित है जिसमें गाँव का नाम ''श्री गुनचरित'' लिखा हुआ है और दात्ता का नाम अस्पष्ट है।

कमरे की पश्चिमी दीवार की ओर 12 और मूर्तियाँ तथा शिलाखण्ड है। दाहिने दीवार की ओर छः और उतरी दीवार की ओर 22 मूर्तियाँ है। उतरी दीवार की ओर बुद्ध पद्मासन की मुद्रा में 1.5 फीट ऊँची बुद्ध की एक मूर्ति है। इसमें बने हुए कमल–दल के ऊपर 7 पंक्तियों का एक लेख है जिससे पता चलता है। कि मूर्ति राजा महेन्द्रपाल द्वारा अपने राज्यकाल में वैशाख शुक्ल पंचमी के दिन गुनचरित विहार को दी गई थी।[18] लेकिन कनिंघम[19] इस पाँच लाईन का मानते है।

चिलोर

चिलोर एक महत्वपूर्ण पुरास्थल है जो मगध की पौराणिक एवं पुरातात्विक महता को चित्रित करता है।[20] चिलोर 24 38′ उतर से 84 4′ पूरब[21] गया से 30 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम और गुरूआ प्रखण्ड मुख्यालय से 3.5 किलोमीटर पूर्व से मोरहर नदी के पश्चिमी किनारे पर अवस्थित है। मेजर किट्टो के अनुसार मोरहर नदी के पश्चिम छोर पर एक विशाल गढ़ है जिसपर खण्डित किला के अवशेष है।[22] इस गढ़ पर एन.बी.पी., लाल मृद्भाण्ड एवं काले मृद्भाण्ड बहुतायत में मिले है। इस गढ़ पर उतरी काले चमकीले मृद्भाण्ड, लाल एवं काला मृद्भाण्ड, लाल मृद्भाण्ड एवं काला मृदृभाण्ड बहुतायत में मिलते है। समानांतर एवं लम्बवत रेखाओं से चित्रित लाल एवं काले मृद्भाण्ड के अवशेष इस स्थल से मिलते है। इसके कुछ पात्रों पर पीले रंग से चित्रित मछली के जाल सदृश बने है और कुछ बेसिनों के सतही किनारों पर चॉकलेटी पॉलिश के चित्रण मिलते है। इस क्षेत्र से लाल एवं काला मृद्भाण्ड के पात्र–प्रकारो पर विभिन्न प्रकार के चित्रांकनों का मिलना ताम्र–पाशाणिक संस्कृति के निवसित होने को परिलक्षित करता है।[23] यहाँ से मिले पात्र प्रकार की तुलना सोनपुर में उत्खनन पश्चात् मिले बर्तनों से किया जा सकता है। चिलोर गढ़ की विशालता इस क्षेत्र में तत्कालीन समय के एक प्रमुख शहर के रूप में संकेतित करता है। गढ़ पर उपस्थित ध्वंशावशेष किलों के सुरक्षा–प्राचीर का स्मरण कराता है क्योंकि किले के दीवारों में शंकु आकार में छिद्र बने है जो अन्दर की अपेक्षा बाहरी अधिक संकीर्ण है। लोगों की मान्यता है कि यह गढ़ कोल राजाओं का था।

थाड़ी पहाड़ी

ऐतिहासिक पुरावशेषों से परिपूर्ण थाड़ी पहाड़ी शेरघाटी अनुमंडल मुख्यालय से 18 किलोमीटर पश्चिम–दक्षिण और बाँकेबाजार प्रखण्ड मुख्यालय से दो किलोमीटर पश्चिम में अवस्थित है। यह बलथरवा ग्राम के पास सिंधपुर की थाड़ी पर्वत श्रेणी, जो तीन ओर मिट्टी और प्रस्तर से 10–12 फीट चौड़ी दीवार से घिरा है। इसके बीच एक गुफा में लिपियुक्त अद्वितीय बौद्ध स्तूप की हेमेटाइट पेन्टिंग मिली है जिसकी खोज पुरातत्ववेता डॉ. शुत्रध्न दॉगी ने किया था। उनके अनुसार चहारदिवारी के बीच एक पहाड़ी पर 142 मीटर व्यास में अद्वितीय बौद्ध स्तूप पुराने जमाने में रहा होगा, जिसके शैलचित्र गुफा में उकेरा हुआ मिला है। इतिहासकारों द्वारा इस शैल चित्र की तुलना झारखण्ड के हजारीबाग जिला में स्थित 'इश्का' और 'पिपरवार' के शैल चित्र से किया जाता है। सम्भावना है कि शैलाश्रय के रूप में इस स्थल के पहाड़ियों में आदि मानव रहकर चित्रकारी करता था।

यहाँ गुप्कालीन महाविहार के ढ़ेर सारे संरचनाओं के अवशेश मिले है। यहाँ मिले मृद्भाण्ड परम्परा के पात्र सुन्दर व चिकने है। बहुसंख्यक पात्र चाक पर बने हुए है या फिर ढ़ाले हुए है। यद्यपि हाथ से बने हुए उदाहरण यदा–कदा मिल जाते है। प्रमुख पात्र प्रकारों में

कटोरे, नाद, कलश और थालियाँ प्रमुख है। इन पर गोलाकार धरियाँ, सीधी रेखायें एवं अर्द्धवृत का अलंकरण है। यहाँ से लौह धातु के अवशेष भी मिले है। प्राचीन काल में बौद्धो का यह प्रमुख केन्द्र स्थल था। यहाँ स्तूप के दर्शन व पूजन हेतु दूर–दूर से बौद्ध आते थे। यही कारण कि पास की पहाड़ी पर भी बौद्ध मन्दिर बने थे जिसे श्रद्धालु पूजा–अर्चना करते थे।

मरहट–मुरली पहाड़

शैव एवं बौद्ध महाविहारों से भरा–पुरा मरहट–मुरली पहाड़ एक महत्वपूर्ण पुरास्थल है। यह पुरातात्विक स्थल चिलोर के विपरित मोरहर नदी के पूर्वी छोर पर गया शहर से 28 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम और गुरूआ मुख्यालय से 5 किलोमीटर पूरब में अवस्थित है। मरहट और मुरली दोनो जुड़वा पहाड़ है जो 1913 ई. के भू–सर्वेक्षण के अनुसार वर्तमान में क्रमशः बैजू बिगहा एवं छेछू बिगहा के अंतर्गत पड़ता है।

मेजर किट्टो[24] ने 1847 में प्रथम बार इस स्थल को देखा और इसे चिलोर के समान बताया। उन्होने बताया कि यहाँ किलो से भरा एक महत्वपूर्ण शहर था। साथ ही इसमें कोई संदेह नहीं कि नदी किनारे स्थित इन दो पहाड़ों पर शैव एवं बौद्ध महाविहार प्रतिष्ठापित था जो ईटों से भरा–पूरा था। बंगाल लिस्ट केवल किट्टो द्वारा वर्णित विवरण को दुहराता है।[25] 20 अक्टूबर 2000 ई. को मरहट पहाड़ के ऊपर 7 फीट लम्बा और 3 फीट गोलाकार शिवलिंग मिला है जो लाल प्रस्तर के अंडाकर आकृति में है। शिवलिंग के चारो ओर दीवार निर्मित है जिसके चारों ओर नौ चैम्बर भी मिले है। इसमें सम्भवतया पूर्व काल में भी मूर्तियाँ स्थापित रही होगी। लिंग के आधार–स्तम्भ अश्टकोणीय है जिसकी बाहरी लम्बाई तीन फीट है। लिंग के नीचले भाग में एक त्रिशूल अंकित है। यहँ से खुदाई के क्रम में ग्रेनाईट पत्थर से निर्मित ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्ति एवं बैसाल्ट पत्थर से निर्मित खण्डित उमा–महेश्वर की प्रतिमा मिली है।

मुरली पहाड़ पर भी कटी हुई सीढ़ियाँ एवं ईटों के टुकड़े मिले है। इस पहाड़ के शीर्ष पर ईटों से निर्मित भग्नावशेश मिले है जो स्तूप के आकार में दिखाई पड़ते है। साथ ही पहाड़ के नीचले क्षेत्र में एक यक्षिणी की खण्डित प्रतिमा भी मिली है।

बाँकेधाम

बाँकेधाम एक महत्वपूर्ण पर्यटन एवं तीर्थ पुरास्थल है। यह गया से 50 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम एवं शेरघाटी से 15 किलोमीटर पश्चिम–दक्षिण शेरघाटी–इमामगंज मार्ग पर स्थित है। मूलतः बाँकेधाम बाँकेबाजार के टंडवा पहाड़ पर अवस्थित है जो दो किलोमीटर लम्बी एवं एक किलोमीटर चौड़ी है। यहाँ 1984 में खुदाई के पश्चात् शिव, सूर्य एवं बौद्ध मन्दिर के अवशेष मिले है जिससे स्पष्ट होता है कि हिन्दू–बौद्ध संस्कृति का प्रमुख स्थल था। यहाँ श्रावण माह में काँवरिये जल भरकर बाँकेधाम स्थित शिवलिंग पर चढ़ाते है।[26]

इस पहाड़ के कई श्रृखलाएँ है जिनपर मिले भग्नावशेषों एवं नवनिर्मित मंदिरों के आधार पर अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है। सूर्यपूरी में सूर्य की तीन भव्य प्रतिमा स्थापित है जो काले पत्थर की बनी है। सप्त अश्वरथ पर सवार सारथी के साथ भगवान सूर्य की खड़ी मूर्ति दिखाई गई है जिसके दोनों ओर उनकी दोनों पत्नियों – संज्ञा और छाया – की मूर्ति है। जय अम्बे की एक मूर्ति भी भग्न रूप में निकट में खोदी गई जमीन के निचले स्तर से प्राप्त मंदिर के अवशेश से प्राप्त हुई हैं। इसमें समकक्ष एवं गर्भकक्ष दोनों के अवशेश है। ऐसा प्रतीत होता है। कि मूर्ति के लिए भव्य पीठिका का निर्माण भी किया गया होगा क्योंकि उतरी दीवार में पूजा–अर्चना के जल निकासी के लिए एक पतली नाली भी बनी रहती होगी जिसका भग्नावशेश अभी भी है। अवलोकन से पता चलता है कि स्थल पर मन्दिर का निर्माण दो बार हुआ है। एक तो तराशे शीला खण्डों से और दूसरी बार चौड़ी ईटों द्वारा। उक्त मूर्तियों के अलावा उसी स्थल पर खुदाई से प्राप्त मंदिर के मस्तुल पर रंगे जाने वाला अष्टदल कमल दो टुकड़ों में शीलाखण्डों के रूप में अवस्थित है। सभा मण्डप पत्थर के चारों पाये पर खड़े है जो आठ पहलू के है और यह पत्थर के आधार पर बने है। वर्तमान में दिखने वाला मन्दिर का फर्श

चूना और मिट्टी का बना है किंतु उसके प्लास्टर अभी भी बड़े चिकने है। सूर्यपुरी काफी ऊँचाई पर है और मंदिर निर्माणाधीन है। मंदिर के उत्तर–पश्चिम कोण में पहाड़ के ऊपर काष्ट का जाटयुक्त कच्चा तालाब भी मिला है जो एक जल स्त्रोत से जुड़ा है और बरसात में जल भर जाता है। यहाँ छठ व्रतियों द्वारा चैत एवं कार्तिक माह में अर्ध्य प्रदान किया जाता है।

श्रावण मास में यहाँ विशाल मेला भी लगता है। यहाँ तालाब की खुदाई में एक सिक्का भी प्राप्त हुआ था जिसके एक पहलू पर हनुमान जी का चित्र एवं दूसरे पहलू पर राम परिवार का चित्र है। उस पर राम, लक्ष्मण और सीता की जय तथा हनुमान सन् 47340 लिखा है। तालाब से मिले दो शिवलिंग, राम की मूर्ति, चक्र एवं सिक्के स्थानीय मगध ग्रामीण बैंक, बांकेबाजार के लॉकर में रखा है। सभी मूर्तियों का पंजीकरण बिहार पुरातत्व निदेशालय से किया जा चुका है।

निश्कर्श :

सांगोपांग अध्ययन करने पर शेरघाटी अनुमण्डल भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण वाहक परिलक्षित होता है। शेरघाटी अनुमण्डल का सांस्कृतिक धरोहर 'सर्वधर्म समभाव' पर आधारित है। इस धरती पर हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम, सिख, जैन एवं ईसाई धर्मावलम्बियों की परम्परागत रूप से उपस्थिति रही है। यद्यपि आर्यों ने गया की धरती को अनार्य एवं अछूतों का वास बताया है जिसके अन्तर्गत शेरघाटी अनुमण्डल भी सम्मिलित है। लेकिन वास्तविकता है कि इस धरा पर न केवल सनातन धर्म ने अपनी पराकाश्ठा को प्राप्त किया, अपितु वाह्य आडम्बरों एवं अंधविश्वासों की प्रमुखता ने बौद्ध एवं जैन धर्म जैसे बौद्धिक आन्दोलन को प्रतिष्ठापित करने में भी सहायक सिद्ध हुआ। मध्यकाल में मुस्लिम शासकों के वर्चस्व एवं सूफी संतो के छत्रछाया में मुस्लिम धर्म को भी प्रश्रय मिला। इसके अतिरिक्त साहित्य, संगीत, स्थापत्य एवं लोक कला में भी सांस्कृतिक ऊँचाईयों का चुमा। इस सांस्कृतिक समरसता का परिलक्षण शेरघाटी अनुमण्डल के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक पुरास्थलों के अन्वेषण में स्पष्ट झलकता है। पुरातत्व एवं इतिहास का ज्ञान देश की संस्कृति एवं सभ्यता को संरक्षित रखने में सहायक हो सकते है। शेरघाटी को अतित से वर्तमान को जोड़कर देश के सांस्कृतिक पटल पर शेरघाटी की महता को प्रतिबिम्बित किया जा सकता है। सर्वेक्षण में अनेक ऐसे अद्भूत पुरावशेष परिलक्षित हुए है जो देश के अन्य पुरास्थलों से भिन्नता रखते है। इस प्रकार शेरघाटी अनुमण्डल पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक धरोहरों से आच्छादित है। इस क्षेत्र को पर्यटन के नक्शे पर लाकर शेरघाटी अनुमण्डल की महता में चार–चाँद लगाया जा सकता है। यद्यपि इस क्षेत्र में पहाड़ों के कन्दराओं के कटाव एवं लोगों में जागरूकता न होने से इस क्षेत्र की पूरातात्विक महता पर प्रश्न चिन्ह लगता रहा है। आवश्यकता है पत्थरों के कटाव को रोकने की एवं लोगों में अपने सास्कृतिक महता को उजागर करने की।

संदर्भ सूची :

1. राय चौधरी, पी. सी. (1951). बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर गया, पटनाः बिहार गवर्नमेंट प्रेस. पृ.
2. प्रसाद, जनक नन्दन(1983). मूक आवाज. साप्ताहिक ; 9 मईद्ध, गया
3. ओमेली, एल. एस. एस. (1906). बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर–गया, कलकता. पृ.
4. ओमेली, एल. एस. एस. (1906) वही. पृ.
5. प्रसाद, बच्चू (1984). शेरघाटी एक झलक. शेरघाटी, गया. पृ.
6. सिंह, ए. के. (1986). आर्कियोलॉजी ऑफ्रफ द ओल्ड गया. थेसिस ऑफ्रफ पटना यूनिवर्सिटी, पटना.
7. किट्टो, मेजर ;(1847). जे.ए.एस.बी., कलकता, पृ. 277.
8. ग्रियर्सन, जॉर्ज ए. (1893). नोट्स ऑन द डिस्ट्रिक्ट आफ्रफ गया. द बंगाल सचिवालय प्रेस, कलकता, पृ.

9. रवि, राकेश कुमार सिन्हा (2003). धरोहर मगध के. जिल्द–1. गया, पृ.63.
10. राय चौधरी, वही, पृ. 331
11. किट्टो, वहीं, पृ. 277.
12. बंगाल लिस्ट, पृ. 334.
13. अमरेन्द्र, कुमार (2004). पुराततव और बिहार. पटना, पृ 67.
14. किट्टो, वही. पृ.278.
15. बेगलर, सी. ए. एस. आई.–8, पृ, पृ 63
16. राय चौधरी, वही, पृ 331.
17. पाटिल, डी.आर. (1963). द एंटीक्वेरियन रिमेन्स इन बिहार, पटना, पृ 155
18. पाटिल, वही, पृ 155.
19. कनिंघम, ए. (1887). ए. एस. आई. जिल्द–3, पृ 124.
20. बेगलर, वही, पृ 64.
21. पाटिल, डी.आर.,वही, पृ 618.
22. किट्टो, मेजर. वही, पृ.277
23. सिन्हा, बी. पी. (2000). डाइरेक्टरी बिहार आर्कियोलॉजी, पटना.
24. किट्टो, वही. पृ.277.
25. बंगाल लिस्ट, पृ 336.
26. रवि, वही, पृ 60–61.

••••••••••••